International Journal of Foreign Trade and International Business

E-ISSN: 2663-3159
P-ISSN: 2663-3140
Impact Factor: RJIF 5.22
www.foreigntradejournal.com
IJFTIB 2022; 4(2): 41-44
Received: 20-05-2022
Accepted: 25-06-2022

डॉ. बबिता वैदिक
एसोसिएट प्रोफेसर,
अर्थशास्त्र, ठाकुर बीरी सिंह महाविद्यालय, टूंडला,
फिरोजाबाद, उत्तर प्रदेश,
भारत

Corresponding Author:
डॉ. बबिता वैदिक
एसोसिएट प्रोफेसर,
अर्थशास्त्र, ठाकुर बीरी सिंह महाविद्यालय, टूंडला,
फिरोजाबाद, उत्तर प्रदेश,
भारत

मुद्रा विनिमय दर और अर्थव्यवस्था- एक अध्ययन

डॉ. बबिता वैदिक

सारांश
उद्देश्य: मुद्रा विनिमय दर का अर्थव्यवस्था पर प्रभाव का अध्ययन *करना//*
प्रक्रिया: दो देशों को व्यापार करते समय अपनी मुद्राओं का विनिमय करना पड़ता है। अलग अलग देशों की मुद्राओं का मूल्य अलग होता है इसलिए व्यापार में लेन देन करते समय हम मुद्राओं का विनिमय दर निर्धारित करते है। अंतरराष्ट्रीय व्यापार में सबसे बड़ी समस्या विदेशी भुगतान के लिए कौन सी मुद्रा प्रयोग में लाई जाए ये है। परंतु वर्तमान युग में जब प्रत्येक देश अपनी मुद्रा को दूसरे देश की मुद्रा में बदलना चाहता है तो ऐसे में विदेशी दायित्वों को चुकाना एक जटिल समस्या है विभिन्न देशों में विभिन्न मुद्राएं चलन में होती है जब इन देशों में व्यापार होता है तो आप सी भुगतान के लिए उनकी मुद्राओं में विनिमय दर का प्रश्न उपस्थित होता है। विनिमय दर के निर्धारण में दो विभिन्न देशों की मुद्राओं के पारस्परिक मूल्य को ज्ञात किया जाता है । दूसरे देश को दी हुई मुद्रा की इकाइयों के बदले एक देश की मुद्रा की कितनी इकाइयां प्राप्त की जा सकती है । स्वतंत्र विश्व अर्थव्यवस्था में दो देशों की विनिमय दर को सदैव निश्चित नहीं माना जा सकता वरन विश्व में उस मुद्रा की मांग व पूर्ति में होने वाले परिवर्तन उसकी विनिमय दर को भी प्रभावित करते हैं । मुद्रा विनिमय दर का निर्धारण उसी सिद्धांत के आधार पर किया जाता है । जिसके अनुसार वस्तुओं का मूल्य निर्धारित होता है अर्थात मांग और पूर्ति का सिद्धांत। इस प्रकार विनिमय दर का निर्धारण उस बिंदु पर होता है । यहां पर विदेशी मुद्रा की कुल मांग उसकी कुल सूची पूर्ति के बराबर हो जाती है। यदि अंतरराष्ट्रीय बाजार में किसी मुद्रा की मांग बढ़ती है ,तो उसका मूल्य बढ़ने की प्रवृति उत्पन्न हो जाती है। और यदि मुद्रा की मांग कम हो जाती है तो उसके मूल्य में कमी होने लगती सिद्धांत वर्तमान अंतरराष्ट्रीय विनिमय दर एक प्रतिबंधित अस्थायी विनिमय दर द्वारा निर्धारित की जाती है । एक प्रतिबंधित अस्थायी विनिमय दर का अर्थ है कि प्रत्येक मुद्रा का मूल्य उसकी सरकार या केंद्रीय बैंक की आर्थिक क्रियाओं से प्रभावित होता है।
यदि अमेरिका का एक व्यापारी ब्रिटेन से एक मशीन का आयात करना चाहता है तो उसे पौंड स्टर्लिंग में कीमत पर विचार करना होगा कि डॉलर में पॉन्ड का क्या मूल्य है। मुद्रा विनिमय दर का निर्धारण उस बिंदु पर होता है यहां विदेशी मुद्रा की मांग व पूर्ति बराबर हो जाती है।
निष्कर्ष: विनिमय दर व्यापक आर्थिक कारकों जैसे मुद्रा स्फीति, ब्याज दर ,सट्टा बाजार बैंकिंग प्रभाव से प्रभावित होती है क्योंकि यह बड़े पैमाने पर एक अर्थव्यवस्था के स्वास्थ्य को निर्धारित करते हैं।

कूट शब्द: विनिमय दर, डॉलर, पौंड, मांग, पूर्ति

प्रस्तावना
हम सब विपन्नता से संपन्नता की ओर बढ़ने का निरंतर प्रयास करते रहते है । हमारे पास सब कुछ नहीं होता कुछ चीजें जो हमारे पास नहीं होती उसके लिए हम दूसरों पर निर्भर रहते हैं । आज के बाजार के युग में हम दूसरों से व्यापार करके अपनी आवश्यकताओं की पूर्ति या अनुपलब्ध चीजो की प्राप्ति करते हैं। व्यापार चाहे अपने

स्थानीय बाजार में हो या देश के बाजार से हैं या अंतरराष्ट्रीय बाजार से हो यह हमेशा आवश्यकताओं की पूर्ति करता हैं। परंतु यह हमेशा मुद्रा पर निर्भर करता है जैसा कि हम जानते हैं कि अंतर्राष्ट्रीय बाजार में व्यापार करने के लिए अंतरराष्ट्रीय मुद्रा पर निर्भर रहना होता है तथा विभिन्न देशों की मुद्राएं अलग अलग है।

अंतराष्ट्रीय व्यापार कुछ मौद्रिक समस्याओं को भी जन्म देता है। जैसे विनिमय दर का निर्धारण ,विनिमय नियंत्रण ,विभिन्न देशों में विभिन्न मुद्राओं का प्रचलन है । जिनका नियंत्रण वहां के केंद्रीय बैंकों द्वारा किया जाता है अंतरराष्ट्रीय व्यापार में सबसे बड़ी समस्या यह होती है कि विदेशी भुगतान के लिए कौन सी मुद्रा प्रयोग में लाई जाए। स्वर्ण मान के दिनों में यह समस्या अधिक जटिल न थी क्योंकि विदेशी भुगतान स्वर्ण के माध्यम से किया जा सकता था । परंतु वर्तमान युग में जब प्रत्येक देश अपनी मुद्रा को दूसरे देश की मुद्रा में बदलना चाहता है तो ऐसे में विदेशी दायित्व को चुकाना एक जटिल समस्या है।

विनिमय दर

विभिन्न देशों में विभिन्न मुद्राएं चलन में होती है । जब इन देशों में व्यापार होता है तो आपसी भुगतान के लिए उनकी मुद्राओं में विनिमय दर का प्रश्न उपस्थित होता है। विदेशी व्यापार में क्रेता एवं विक्रेता का कम से कम दो कीमतों से संबंध होता है ।एक तो वस्तुओं और सेवाओं की कीमत और दूसरी विदेशी मुद्रा की कीमत जैसे यदि अमेरिका का एक व्यापारी ब्रिटेन से एक मशीन का आयात करना चाहता है तो उसे न केवल मशीन की पाउंड स्टर्लिंग में कीमत पर विचार करना होगा वरन यह भी विचार करना होगा कि डॉलर में पौंड का क्या मूल्य है सरल शब्दों में डॉलर और पौंड में विनिमय दर क्या है विनिमय दर से अभिप्राय एक मुद्रा की दूसरी मुद्रा में कीमत पर है। यह अनुपात है जिस पर एक देश की मुद्रा दूसरे देश की मुद्रा से बदली जाती है । विनिमय दर को मुद्रा का वाहय मूल्य भी कहते है।

विनिमय दर के विभिन्न प्रकार-

विनिमय दर के प्रकारों को निम्न प्रकार से समझा सकते हैं ।

1. **तात्कालिक दर:** तात्कालिक दर वह दर है जिस पर बैंक विदेशी भुगतान की व्यवस्था करती है और इसी कारण इसे केविल रेट या तार से स्थानांतरण वाली दर की रेट भी कहा जाता है। इसका कारण यही है कि विदेशी विनिमय का अविलंब हस्तांतरण अथवा स्थानांतरण केविल या तार द्वारा क्रेता से विक्रेता को इसी दर पर किया जाता है। इस दर को चेक दर या मेल ट्रांसफर दर भी कहा जाता है । बहुधा बैंक तात्कालिक दर के आधार पर ही विदेशी विनिमय बेचने व खरीदने का कार्य करते हैं ।
2. **अवधि दर:** विदेशी विनिमय की यह वह दर है जिस पर बैंक विदेशी मुद्रा से सम्बद्ध ऐसे प्रपत्रों को बेचते या खरीदते हैं । जिनका एक निर्दिष्ट अवधि के बाद भुगतान होगा ।
3. **अग्रिम विनिमय दर:** जिस दर पर भविष्य में विदेशी विनिमय प्राप्ति हेतु सौदे किए जाए उसे अग्रिम विनिमय दर के नाम से पुकारा जाता है। अग्रिम दर से सम्बद्ध एक महत्वपूर्ण धारणा विदेशी विनिमय व्यवसायी की आड़ है। अग्रिम दर पर विदेशी विनिमय खरीदने (बेचने)का सौदा करने के साथ ही इससे उल्टा अर्थात विदेशी विनिमय बेचने (खरीदने) का सौदा भी कर लेता है।
4. **अनुकूल तथा प्रतिकूल विनिमय दर:** जब विनिमय दर अपने देश की मुद्रा में व्यक्त की जाती है तो कम होती हुई विनिमय दर देश के लिए अनुकूल विनिमय दर कहलाती है । इसके विपरीत बढ़ती हुई विनिमय दर देश के लिए प्रतिकूल होती है।
5. **स्थिर एवं अस्थिर अथवा लोचदार विनिमय दर:** विनिमय दर से तात्पर्य उस विनिमय दर से है जिसमें परिवर्तन एक निश्चित सीमा तक हो सकते है । अस्थिर अथवा लोचदार विनिमय दर वह दर है जिसमें मांग एवं पूर्ति की शक्तियों के फल स्वरुप परिवर्तन होता रहता है तथा सरकार का इस पर कोई नियंत्रण नहीं रहता है।

मुद्रा की विनिमय दर कैसे निर्धारित की जाती है

विनिमय दर के निर्धारण में दो विभिन्न देशों की मुद्राओं के पारस्परिक मूल्य को ज्ञात किया जाता है । दूसरे देश को दी हुई मुद्रा की इकाइयों के बदले एक देश की मुद्रा की कितनी इकाइयां प्राप्त की जा सकती है । स्वतंत्र विश्व अर्थव्यवस्था में दो देशों की विनिमय दर को सदैव निश्चित नहीं माना जा सकता वरन विश्व में उस मुद्रा की मांग व पूर्ति में होने वाले परिवर्तन उसकी विनिमय दर को भी प्रभावित करते हैं । मुद्रा विनिमय दर का निर्धारण उसी सिद्धांत के आधार पर किया जाता है । जिसके अनुसार वस्तुओं का मूल्य निर्धारित होता है अर्थात मांग और पूर्ति का सिद्धांत। इस प्रकार विनिमय दर का निर्धारण उस बिंदु पर होता है । यहां पर विदेशी मुद्रा की कुल मांग उसकी कुल सूची पूर्ति के

बराबर हो जाती है। यदि अंतरराष्ट्रीय बाजार में किसी मुद्रा की मांग बढ़ती है ,तो उसका मूल्य बढ़ने की प्रवृति उत्पन्न हो जाती है और यदि मुद्रा की मांग कम हो जाती है तो उसके मूल्य में कमी होने लगती है। वर्तमान अंतरराष्ट्रीय विनिमय दर एक प्रतिबंधित अस्थायी विनिमय दर द्वारा निर्धारित की जाती है । एक प्रतिबंधित अस्थायी विनिमय दर का अर्थ है कि प्रत्येक मुद्रा का मूल्य उसकी सरकार या केंद्रीय बैंक की आर्थिक क्रियाओं से प्रभावित होता है।

विनिमय दरों को प्रभावित करने वाले कारक

दीर्घकालीन अथवा सामान्य विनिमय दर की प्रवृति स्थिरता की ओर होती है किंतु अल्पकालीन या बाजार दर या वास्तविक विनिमय दर में परिवर्तन होते रहते हैं । जिनका आंतरिक अर्थव्यवस्था विशेष रूप से उत्पादन, रोजगार तथा राष्ट्रीय आय की स्थिति पर महत्वपूर्ण प्रभाव पड़ता है । विनिमय दर में होने वाले उच्चावचनों के निम्न कारण हो सकते है।

मुद्रास्फीति दर

बाजार मुद्रास्फीति में परिवर्तन मुद्रा विनिमय दरों में परिवर्तन का कारण बनता है। दूसरे देश की तुलना में कम मुद्रास्फीति दर वाला देश अपनी मुद्रा के मूल्य में वृद्धि देखेगा। जहां मुद्रास्फीति कम होती है वहां वस्तुओं और सेवाओं की कीमतें धीमी दर से बढ़ती हैं। लगातार कम मुद्रास्फीति दर वाला देश बढ़ती मुद्रा मूल्य प्रदर्शित करता है जबकि उच्च मुद्रास्फीति वाला देश आमतौर पर अपनी मुद्रा में मूल्यह्रास देखता है और आमतौर पर उच्च ब्याज दरों के साथ होता है।

ब्याज दरें

ब्याज दर में परिवर्तन मुद्रा मूल्य और डॉलर विनिमय दर को प्रभावित करते हैं। विदेशी मुद्रा दरें, ब्याज दरें और मुद्रास्फीति सभी सहसंबद्ध हैं। ब्याज दरों में वृद्धि से देश की मुद्रा की सराहना होती है क्योंकि उच्च ब्याज दरें उधारदाताओं को उच्च दर प्रदान करती हैं, जिससे अधिक विदेशी पूंजी आकर्षित होती है, जिससे विनिमय दरों में वृद्धि होती है।

देश का चालू खाता / भुगतान संतुलन

एक देश का चालू खाता विदेशी निवेश पर व्यापार और आय के संतुलन को दर्शाता है। इसमें इसके निर्यात, आयात, ऋण आदि सहित लेनदेन की कुल संख्या शामिल है। निर्यात की बिक्री के माध्यम से कमाई की तुलना में उत्पादों के आयात पर अपनी मुद्रा का अधिक खर्च करने के कारण चालू खाते में कमी मूल्यह्रास का कारण बनती है। भुगतान संतुलन इसकी घरेलू मुद्रा की विनिमय दर में उतार-चढ़ाव करता है।

सरकारी ऋण

सरकारी ऋण सार्वजनिक ऋण या केंद्र सरकार के स्वामित्व वाला राष्ट्रीय ऋण है। सरकारी कर्ज वाले देश में विदेशी पूंजी हासिल करने की संभावना कम होती है, जिससे मुद्रास्फीति बढ़ जाती है। यदि बाजार किसी निश्चित देश के भीतर सरकारी ऋण की भविष्यवाणी करता है तो विदेशी निवेशक अपने बांड खुले बाजार में बेचेंगे। नतीजतन, इसकी विनिमय दर के मूल्य में कमी आएगी।

सट्टा बाजार अथवा स्टॉक एक्सचेंज का प्रभाव

भविष्य में विनिमय दर में परिवर्तन की आशा से जब किसी देश के लोग अन्य देशों में स्टॉक,शेयर अथवा प्रतिभूतियां खरीदने लगते हैं तो उनके भुगतान के लिए विनिमय की मांग बढ़ जाती है । तथा विदेशी मुद्राओं के मूल्य में वृद्धि होती है । इसके विपरीत जब किसी देश में स्टॉक शेयर तथा प्रतिभूतिया खरीदने लगते हैं तो देश की मुद्रा का मूल्य ऊंचा उठ जाता है इसी प्रकार ऋणों, ब्याज तथा लाभांश के लेनदेन और सट्टे के रूप में होने वाले लेनदेन का विदेशी विनिमय की मांग तथा पूर्ति पर प्रभाव पड़ता है । और विनिमय दर में परिवर्तन हो जाता है।

बैंकिंग प्रभाव

विनिमय दर में परिवर्तन देश की बैंकिंग नीति के भी परिणाम हो सकते हैं । ऊंची बैंक दर विदेशी पूंजी को आकर्षित करती है जिसके चलते विदेशी मुद्राओं की जिनकी मांग से अधिक हो जाती है। तथा उनका देश की मुद्रा में मूल्य में गिर जाता है ।अन्य देशों की अपेक्षा किसी देश में बैंक दर नीची है तो इस देश की पूंजी अन्य देशों को जाने लगेगी । विदेशी मुद्रा की मांग अधिक होने पर विनिमय दर गिर जाएगी।

राजनैतिक स्थिति

यदि देश में स्थायी सरकार है शांति और सुरक्षा की समुचित व्यवस्था है सरकारी नीति निष्पक्ष है ,और औद्योगिक संबंध अच्छे हैं तो ऐसे देश में अधिक विदेशी पूंजी के आगमन होगा। तथा इससे विदेशी व्यापार का विस्तार होगा ऐसी दिशा में विनिमय दर इस देश के पक्ष में होगी जिन देशों में युद्ध एवं राजनैतिक अस्थिरता एवं अशांति रहती है । उनकी साख पर अन्य देशों का विश्वास नहीं रहता उन्हें विदेशी पूंजी अथवा ऋण प्राप्त नहीं होते जिससे उनकी आर्थिक स्थिति अस्थिर और

संकट मय में हो जाती है। और उनकी मुद्राओं की विनिमय दर गिरने लगती है।

मुद्रा विनिमय दर का निवेश पर प्रभाव

किसी देश की मुद्रा एक अत्यधिक अस्थिर संपत्ति है । यह मुद्रा स्थिति ब्याज दरों भू राजनैतिक स्थिरता व्यापार संतुलन सार्वजनिक ऋण और देश आर्थिक स्वास्थ्य जैसे कई कारकों के आधार पर उतार-चढ़ाव करता है । डॉलर के मुकाबले रुपया कैसे कमजोर या मजबूत हुआ रुपए के मजबूत या कमजोर होने पर बाजार प्रभावित होता है मुद्रा विनिमय दर का निवेश पर भी प्रभाव पड़ता है।

(a) विदेशी निवेशक प्रभाव

विदेशी विनिमय दर या विनिमय दर एक मुद्रा की दूसरी मुद्रा के मुकाबले कीमत को संदर्भित करती है । उदाहरण के लिए जब हम कहते हैं कि $1 के 75 रुपए के बराबर होता है तो यह एक मुद्रा की दूसरे के सापेक्ष अभिव्यक्ति है। अगर यह बढ़कर 78 रुपए हो जाता है तो रुपया कमजोर हो जाता है और डॉलर मजबूत हो जाते हो रहा है तो हम एक अमेरिकी डॉलर प्राप्त करने के लिए 3 अतिरिक्त रुपए खर्च करने होंगे। वस्तुओं की वैश्विक मांग में गिरावट देखी जा सकती है। क्योंकि दुनिया भर में अधिकांश व्यापार डॉलर में होता है यह भारत में एक विदेशी निवेशक द्वारा किए गए निवेश के मूल्य को कम कर सकता है क्योंकि अधिकांश विदेशी निवेश अमेरिकी डॉलर में होता है विनिमय दर में उतार-चढ़ाव किसी देश में निवेश पर नकारात्मक या सकारात्मक प्रभाव डाल सकता है। अर्थव्यवस्था की मजबूती और मुद्रा की दरें एक दूसरे के सीधे अनुपातिक है। इसका मतलब यह है कि जब अर्थव्यवस्था मजबूत होती है तो उस देश की मुद्रा मजबूत होती है, और वैश्विक निवेशक उस देश के शेयर बाजार में निवेश करने की अधिक संभावना रखते हैं । इस प्रकार विदेशी निवेशक देश की विशेष संपत्ति में मूल्य वर्ग की संपत्ति खरीदते हैं।

(b) खुदरा निवेशकों पर प्रभाव

निवेश पोर्टफोलियो पर विदेशी मुद्रा के उतार-चढ़ाव का खुदरा निवेशकों पर भी प्रभाव पड़ता है ।

(c) म्यूचुअल फंड पर प्रभाव

म्युचुअल फंड या विदेशी स्टॉक या बॉन्ड् में पैसा लगाया है ,तो मुद्रा शिफ्ट एक महत्वपूर्ण निर्धारक है। यदि डॉलर मजबूत होता है ,तो इसका परिणाम आप के विदेशी म्युचुअल फंड निवेश की सराहना और मूल्य में वृद्धि होगी। और डॉलर कमजोर होता है ,तो आपका निवेश मूल्य खो सकता है।

(d) घरेलू निवेश पर प्रभाव

यदि आपके पास कोई विदेशी निवेश नहीं है और केवल घरेलू संपत्ति है तो भी आप वैश्विक बाजार में मुद्रा जोखिम के संपर्क में आ सकते हैं । शेयर बाजार में कई कंपनियों का विदेशी कंपनियों में निवेश है। यदि उस देश की मुद्रा में गिरावट आती है ,तो इससे आपके निवेश में गिरावट आ सकती है। कई कंपनियां अलग-अलग देशों में अपना सामान और सेवाएं भी बेचती हैं ,जिनकी मुद्राएं अलग-अलग होती है। विदेशी मुद्रा में गिरावट से उनके मुनाफे में गिरावट आ सकती है ,जिससे कंपनी के प्रदर्शन पर नकारात्मक प्रभाव पड़ेगा और इसलिए आपके निवेश पर भी प्रभाव पड़ता है।
विदेशी मुद्रा में उतार-चढ़ाव आपके निवेश पोर्टफोलियो पर प्रभाव डाल सकता है। विदेशी स्टॉक और म्यूचुअल फंड निवेश वाले व्यक्ति मुद्रा में उतार-चढ़ाव से प्रभावित होंगे और घरेलू संपत्ति वाले लोग भी कीमत में उतार-चढ़ाव के अप्रत्यक्ष प्रभाव का अनुभव कर सकते हैं।

निष्कर्ष

विनिमय दर व्यापक रूप से व्यापक आर्थिक कारकों से प्रभावित होती है ,क्योंकि यह बड़े पैमाने पर एक अर्थव्यवस्था के स्वास्थ्य को निर्धारित करते हैं । जो कि विदेशी निवेशकों और वाणिज्य के डीलरों के लिए सबसे महत्वपूर्ण विचार है। जब यह तय किया जाता है कि व्यापार करना है या अर्थव्यवस्था में निवेश करना है मुद्रा विनिमय दरों के कारण संभावित नुकसान से बचने की कोशिश करने वाला व्यक्ति लॉक इन विनिमय दर सेवा का विकल्प चुन सकता है। जो प्रतिकूल आर्थिक परिस्थितियों के बावजूद उसी दर पर मुद्रा विनिमय की गारंटी देता है। निर्धारित सीमाओं के अंतर्गत विदेशी विनिमय दर में परिवर्तन ही देश के आर्थिक विकास में सहायक हो सकते हैं।

संदर्भ

1. अर्थशास्त्र - डॉ०जी०सी०सिघई पेज -238-239
2. अंतर्राष्ट्रीय व्यापार -डॉ०टी०टी०सेठी पेज -282-283
3. अंतर्राष्ट्रीय अर्थशास्त्र -एस०एस० अग्रवाल पेज 102-103
4. https//groww.in>Blog>stocks
5. https//www.angelone.in
6. https//www gyanglow.com
7. https//grow.in>Blog>Markets